आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:17-12-14

अपने ज्ञान और योग से हम शूद्र आत्माओं को ब्राह्मण सो देवता बनाने वाले, ज्ञान-सागर, पतित-पावन बाप ने कहा, मीठे बच्चे - यह पुरुषोत्तम संगमयुग ट्रांसफर होने का युग है, अभी तुम्हें कनिष्ठ से उत्तम पुरुष (आत्मा) बनना है.

भक्ति मार्ग में हम जन्म-जन्मांतर पुरुषोत्तम मास मनाते थे, लेकिन न पुरुषोत्तम का सही अर्थ समझते थे, ना ही उसे कोई पुरुषोत्तम बन सके. अभी बाबा ने हमें ज्ञान में पुरुषोत्तम का सही अर्थ समझाया है. पुरुष माना आत्मा और पुरुषोत्तम माना उत्तम पुरुष. स्वयं परमपिता परमात्मा कल्प के संगमयुग पर जब इस धरा पर आते है और मनुष्य आत्माओं को ज्ञान और योग सिखलाते हैं. आत्माओं को पतित से पावन बनने की श्रीमत् देते है. जिसे आत्माये अपने-अपने पुरुषार्थ अनुसार नम्बरवार धारण करती हैं और १६ कला, १४ कला सम्पूर्ण बनती है. अभी यह पुरुषोत्तम संगमयुग पर जैसा पुरुषार्थ आत्मा करती है वैसा ही फिर उसे २१ जन्म सतयुग-त्रेतायुग प्रालब्ध प्राप्त होता हैं. मनुष्य आत्माओं के लिए यह संगमयुग श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ युग है क्योंकि यहाँ उसे स्वयं परमपिता-परमात्मा की पहचान मिलती है और परमात्मा के बताये ज्ञान और योग के मार्ग पर चल कर फिर से आत्मा कनिष्ठ (पतित) से उत्तम (पावन) बनती है.

बाबा की आज की मुरली से आत्मा-परमात्मा पर कहे गये कुछ महा-वाक्यों को स्वयं कि आत्मिक स्थिति बनाकर एक परमात्मा की याद में रहकर पढ़ेंगे तो यह भी पुरुषार्थ हमारी आत्मा को पावन बनाने में मदद करेगा.

- बाबा कहते है बाप ने पहले-पहले तो तुम्हें अपनी पहचान दी है, फिर उनका रहने का स्थान भी समझाया है. बाप कहते हैं मैं तुमको इस रथ (ब्रह्मा) द्वारा मेरी पहचान देने आया हूँ. मैं तुम सबका बाप हूँ, जिसको परमपिता परमात्मा कहा जाता है. मैं नाम-रुप से न्यारा नहीं हूँ. बाप तुम्हें समझाते है जैसे यह पोलार (आकाश) सूक्ष्म है, वैसे बाप भी बहुत सूक्ष्म है. जैसे तुम आत्मा हो वैसे ही बाप भी आत्मा है. बाप तो रहते ही है परमधाम में वह उनके रहने का स्थान है. बाप को जानना, इसे ही ज्ञान कहा जाता है.

- बाबा कहते है अब तुम समझते हो हम आत्मा हैं, न कि शरीर. आत्मा को ही अविनाशी कहा जाता है तो जरूर कोई चीज है ना. बाप ने बच्चों को अच्छी रीति समझाया है, मीठे-मीठे बच्चों, जिन को बच्चे-बच्चे कहते हैं वह आत्मायें अविनाशी हैं. यह आत्माओं का बाप परमपिता परमात्मा बैठ समझाते हैं.

- बाबा कहते है यह खेल एक ही बार सारे कल्प में होता है जबकि स्वयं बाप आकर बच्चों को अपना परिचय देते हैं. कहते है मैं भी पार्टधारी हूँ. कैसे पार्ट बजाता हूँ, यह भी तुम्हारी बुद्धि में है. बाप तुम्हारी पुरानी अर्थात पतित आत्मा को नया पावन बनाते हैं तो फिर शरीर भी तुम्हारे वहाँ सतयुग में गुल-गुल होते है. अभी तुम बाबा-बाबा कहते हो, यह पार्ट चल रहा है ना. आत्मा कहती है बाबा आया हुआ है - हम बच्चों को शांतिधाम घर ले जाने के लिए. शांतिधाम के बाद है ही सुखधाम.

- बाबा कहते है तुम यह कह सकते हो ना कि हम असूल स्वर्ग में रहने वाले देवी-देवतायें थे फिर ८४ का चक्र लगाए अब संगम पर आये हैं. यह ट्रांसफर होने का पुरुषोत्तम संगमयुग है जब हम बहुत उत्तम पुरुष बनते हैं. हर ५ हजार वर्ष बाद हम सतोप्रधान बनते हैं. यह सारा पार्ट अहम आत्मा को मिला हुआ है. मैं आत्मा ८४ जन्म लेती हूँ.

- बाबा कहते है हम सब आत्माये मेल है. हम सब आपस में भाई-भाई है. हम सब आत्माओं का बाप एक है. हम सब आत्माओं को एक बाप से ही वर्सा मिलता है.

- बाबा कहते है बच्चे समझते हैं हमारी आत्मा अविनाशी है, शरीर तो विनाश हो जायेगा. आत्मा ही धारणा करती है, आत्मा ही ८४ जन्म लेती है, शरीर तो बदलते जाते है. आत्मा वही है, आत्मा ही भिन्न-भिन्न शरीर लेकर पार्ट बजाती है.

- बाप समझाते हैं - मैं तुम आत्माओं का बाप हूँ. मेरे द्वारा इस रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानने से तुम यह देवी-देवता पद प्राप्त करते हो. बाकी सब आत्माये मुक्ति में चले जाते हैं. बाप तो सबकी सद्गति करते हैं. बाप ही आकर यह पुरानी दुनिया को बदलने की लीला करते है. ॐ शांति.